Volume-7, No. 2 Aug.-2020, pp. Hin.09-13

प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की गैर शैक्षणिक कार्यों में संलग्नता एवं उसका शिक्षा प्रक्रिया पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

श्रीमति वर्तिका वत्स, शोध छात्रा
श्री विकास कुमार, शोध निर्देशक
हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय, उत्तराखण्ड भारत।

सारांश
शिक्षा के व्यापक अर्थ में हम सब एक दूसरे से कुछ न कुछ सीखते हैं इसलिए हम सभी शिक्षार्थी व शिक्षक है, परन्तु समुचित अर्थ में एक विशेष व्यक्ति जो जान बूझकर दूसरों को उनके आचार विचार में परिवर्तन करके प्रभावित करते हैं शिक्षक कहे जाते हैं। पर वर्तमान समय में सरकार शिक्षकों के द्वारा शिक्षण कार्य ही नहीं करवाती बल्कि गैर शैक्षणिक कार्य भी करवाती है। इसलिए प्रस्तुत शोध पत्र में इसी चर गैर शैक्षणिक कार्यों में संलग्नता से शिक्षकों, प्रधनाध्यापकों व शिक्षा मित्रों पर पडने वाले प्रभावों का अध्ययन किया गया है। निष्कर्ष यह प्राप्त हुआ कि गैर शैक्षणिक कार्यों में संलग्नता के कारण शिक्षा प्रक्रिया पर पड़ने वाले प्रभाव के सम्बन्ध में प्रधानाध्यापकों और अध्यापक, अध्यापिकाओं व शिक्षा मित्रों के दृष्टिकोणों में अन्तर है। क्योंकि उन पर शिक्षण कार्य का दवाब भी होता है। दूसरे अध्यापक व अध्यापिकाओं की विचारधारा में समानता है क्योंकि दोनों की स्थिति समान है। इसके बाद अध्यापक, अध्यापिकाओं व शिक्षा मित्रों की तुलना में भी विचारों में अन्तर पाया गया क्योंकि शिक्षा मित्रों की अपेक्षा शिक्षक अपने कार्य में ज्यादा निपुण होते हैं।
मुख्य शब्द– गैर शैक्षणिक कार्य, प्राथमिक विद्यालय, शिक्षक, शिक्षा।

प्रस्तावना

शिक्षा मानव में निहित दिव्य गुणो को प्रस्फुटित करती है। उसे सत्य की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा देती है। ताकि वह ज्ञान की अज्ञान पर, तमस की प्रकाश पर, विद्या की अविद्या पर विजय प्राप्त कर ले। इस विजय के द्वारा आध्यात्मिक द्वार खोले जाते हैं। मानसिक व भौतिकता तो चंचल, परिवर्तनशील एवं क्षणभंगुर है। शिक्षा का वास्तिवक एवं सच्चे अर्थों में यही सार्थक रूप है। शिक्षा के इस अर्थ को युगानुरूप स्वरूप प्रदान करना व्यक्ति एवं समाज का उत्तरदायित्व होता है। आज फिर समय आ गया है कि समाज और व्यक्ति के सम्बन्ध में मौलिक प्रश्नों के समुचित उत्तर शिक्षा के माध्यम से खोजे जाए ताकि मानव तथा समाज का संतुलित विकास हो सके। इसलिए विश्व के अनेक राष्ट्रों ने उपागम व तकनीकी शिक्षा को आधार बनाकर अपने को विकसित राष्ट्रों की संज्ञा दी है। विकसित राष्ट्रों का अनुकरण करके विकासशील राष्ट्र भी अपनी गरीबी, बेरोजगारी, सामाजिक उथल–पुथल और रूढ़िवादिता जैसी समस्याओं के निराकरण हेतु हल ढूढ़ने में संलग्न हैं और वास्तव में इसका समाधान भी शिक्षा की नवीन संरचना के माध्यम से, नवीन शिक्षण सिद्धान्तों, उपागमों व प्रत्ययों आदि के निर्माण द्वारा ही सम्भव होगा और शिक्षा को जीवन उपयोगी बनाया जा सकेगा।

अतः इन सबको वर्तमान नवीन शैक्षिक संरचना के आधार पर निर्मित करना होगा ताकि जीवन मूल्यों तथा शिक्षा सिद्धान्तों का नवीन रूप से बीजारोपण व अंकुरण हो सके। यह कार्य अध्ययन, अध्यापन व शोधन द्वारा ही किया जा सकेगा। जब हम शिक्षा प्रक्रिया की बात करते है तो हमें उसमें तीन पहुलओं पर ध्यान देना है जो उसके मुख्य बिन्दु भी है। शिक्षक, शिक्षार्थी और पाठ्यक्रम इसमें विद्यालयी शिक्षा में शिक्षक का स्थान महत्वपूर्ण है। शिक्षा को व्यापक अर्थ को समझने के लिए हम सब शिक्षक है और छात्र भी परन्तु अगर हम औपचारिक शिक्षा की बात करें तो उसमें जो व्यक्ति हमें पूर्ण रूप से प्रभावित करता है और सिखाता है। मार्गदर्शन करता है वह शिक्षक ही है।

शिक्षक का पद अत्यन्त आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है शिक्षक अपने जीवन को एक आदर्श व्यक्ति के रूप में ढाल लेता है, वह अपने चरित्र अपनी नैतिकता अपने व्यक्तित्व अपने ज्ञान व अपने आचरण से एक विशेष प्रकार की सीमा में बंध जाता है। जिसको देखकर उसके शिक्षार्थी वैसा ही आचरण करते हैं।

अब मुख्य तथ्य यह है कि वर्तमान समय में शिक्षकों का मुख्य कार्य शिक्षा देना ही नहीं है अपितु सरकार

ने शिक्षकों को शिक्षण कार्य के अलावा ऐसे गैर शैक्षणिक कार्य भी दे दिए हैं जिससे शिक्षण प्रक्रिया पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ रहा है। शिक्षकों को मानसिक व शारीरिक थकान का सामना करना पड़ रहा है। उन्हें मध्याह्न भोजन योजना, चुनाव कार्य, जनगणना और अन्य गैर शैक्षणिक कार्य देकर सरकार उनसे अपना कार्य आसानी से पूर्ण करा रही है लेकिन इन कार्यों से शिक्षा प्रक्रिया कितनी अधिक प्रभावित हो रही है। सरकार इस पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दे रही है। सरकार केवल कागजी कार्यवाही पूर्ण कर रही है। शिक्षा के लिए आर0टी0ई0 जैसे कानून बना रही है पर उसका क्रियान्वयन कैसे होगा? क्या आर0टी0ई0 कानून सफल होगा? और इसको बनाने के साथ–साथ इसके संचालन के लिए क्या सरकार दृढ़ प्रतिज्ञ है? इन सभी नियमों और तथ्यों की अवहेलना की जा रही है अर्थात् इस सम्बन्ध में सरकार बिल्कुल निष्क्रिय है।

सन् 2011 के आरम्भिक तीन महीनों में सभी प्राथमिक विद्यालयों में जनगणना के कारण शिक्षण कार्य या तो बंद रहा या संचालित भी हुआ हो तो नाममात्र के लिए क्योंकि प्रधानाचार्य और शिक्षक महाजनगणना 2011 के आंकडे एकत्र करने में व्यस्त थे तब बच्चों को कौन पढाये? सभी शिक्षकों को जनगणना के कार्य में लगा देना सरकार की शिक्षा के प्रति नगण्य सोच को बिल्कुल सही–सही दर्शाती है कि जो कार्य देश के पढे लिखे बेरोजगार युवक कर सकते थे और अधिक बेहतर तरीके से कर सकते थे वे सभी कार्य शिक्षकों द्वारा किए जा रहे हैं। शिक्षक भी कागजों का कार्य करते हुए मानसिक रूप से इतने बीमार हो जाते हैं कि इच्छा होते हुए भी वे बच्चों को नहीं पढ़ा पा रहे है।

अतः शिक्षा प्रक्रिया को सुचारू रूप से चलाने के लिए आवश्यक है कि शिक्षक अपने व्यवसाय से संतुष्ट रहे तथा उनका पूरा ध्यान शिक्षक प्रक्रिया को प्रभावी बनाने में लगा रहे न कि गैर शैक्षणिक कार्यों में जब तक सरकार इन विशेष बातों पर ध्यान नहीं देगी जब तक प्राथमिक शिक्षा का विकास नामांकन व उपस्थिति में वृद्धि भी सम्भव नहीं हो पाएगी और आर0टी0ई0 जैसे कानून सिर्फ कागजों तक ही रहेगें। कभी भी वास्तविकता का स्वरूप ग्रहण नहीं कर सकते। इस बात को ध्यान में रखते हुए कि मध्याह्न भोजन योजना जैसे कार्यक्रम चलाकर भी सरकार शिक्षा के सार्वभौमीकरण के उद्देश्य को पूरा करने में सफल क्यों नहीं हो पा रही है। हमने निम्न समस्या का अध्ययन किया है।

समस्या कथन– ''प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की गैर शैक्षणिक कार्यों में संलग्नता एवं उसका शिक्षा प्रक्रिया पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।''

शोध के उद्देश्य

1. प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों की गैर शैक्षणिक कार्यों में संलग्नता से शिक्षा प्रक्रिया पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
2. प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की गैर शैक्षणिक कार्यों में संलग्नता से शिक्षा प्रक्रिया पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
3. प्राथमिक विद्यालयों की अध्यापिकाओं की गैर शैक्षणिक कार्यों में संलग्नता से शिक्षा प्रक्रिया पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
4. प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षा मित्रों की गैर शैक्षणिक कार्यों में संलग्नता से शिक्षा प्रक्रिया पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना

1. प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों व अध्यापकों की गैर शैक्षणिक कार्यों में संलग्नता से शिक्षा प्रक्रिया पर पड़ने वाले प्रभावों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों व अध्यापिकाओं की गैर शैक्षणिक कार्यों में संलग्नता से शिक्षा प्रक्रिया पर पड़ने वाले प्रभावों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों व शिक्षा मित्रों की गैर शैक्षणिक कार्यों में संलग्नता से शिक्षा प्रक्रिया पर पड़ने वाले प्रभावों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों व अध्यापिकाओं की गैर शैक्षणिक कार्यों में संलग्नता से शिक्षा प्रक्रिया पर पड़ने वाले प्रभावों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों व शिक्षा मित्रों की गैर शैक्षणिक कार्यों में संलग्नता से शिक्षा प्रक्रिया पर पड़ने वाले प्रभावों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
6. प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापिकाओं व शिक्षा मित्रों की गैर शैक्षणिक कार्यों में संलग्नता से शिक्षा प्रक्रिया पर पड़ने वाले प्रभावों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रयुक्त चर

1. स्वतंत्र चर–गैर शैक्षणिक कार्य।
2. आश्रित चर–अध्यापक, प्रधानाध्यापक, अध्यापिका, शिक्षामित्र।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु वर्णात्मक विधि के अन्तर्गत आने वाली सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु मेरठ जिले के खरखौदा ब्लाक के समस्त दस प्राथमिक विद्यालयों के दस प्रधानाध्यापक, दस अध्यापकों, दस अध्यापिकाओं व दस शिक्षा मित्रों को न्यादर्श के रूप में प्रतिदर्श की यादृच्छिक प्रतिचयन विधि के अन्तर्गत आने वाली लॉटरी विधि द्वारा चुना गया है।

उपकरणों का चयन

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु परीक्षण गुणों को ध्यान में रखकर शोधार्थिनी के द्वारा अपनी निर्देशिका के मार्ग दर्शन में बनाई गई स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ

1. मध्यमान–Mean
2. प्रमाणिक विचलन–S.D
3. टी–परीक्षण–t-test

प्राप्त आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण

शोध की परिकल्पनाओं को निष्पादित करने के लिए सांख्यिकीय द्वितीयक आंकडों को टी–परीक्षण के द्वारा जाँचा गया है।

(1) प्रथम परिकल्पना के आधार पर प्राप्त आंकड़े

क्र. सं.	पद	न्यादर्श का आकार	मध्यमान Mean	प्रमाणिक विचलन S.D	टी–परीक्षण t-test	सार्थक स्तर
1.	प्रधानाध्यापक	10	37.9	0.54	6.03	सार्थक अन्तर है
2.	अध्यापक	10	34.4	1.74		

प्रथम परिकल्पना के अनुसार–प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों व अध्यापकों की गैर शैक्षणिक कार्यों में संलग्नता से उनकी शिक्षा प्रक्रिया पर पड़ने वाले प्रभाव के मध्य सार्थक अन्तर है क्योंकि जब हमने दोनों समूहों से प्राप्त आंकडों के आधार पर दोनों समूहों का (मध्यमान) निकाला और फिर दोनों समूहों का (प्रमाणिक विचलन) निकाला और दोनों समूहों के मध्य तुलना करने के लिए (टी–परीक्षण) का प्रयोग किया जिसमें (टी) का मान (6.03) प्राप्त हुआ है जो (टी) सारणी के अनुसार (0.05) स्तर पर (1.96) से अधिक है और (0.01) स्तर पर (2.58) से भी अधिक है अतः कहा जा सकता है कि गैर शैक्षणिक कार्यों की संलग्नता प्रधानाध्यापकों को उतनी अधिक प्रभावित नहीं करती है। जितनी शिक्षकों को थकान का या कुंठा देती है तो दोनों पर पड़ने वाले प्रभावों में सार्थक अन्तर है। यह परिकल्पना अस्वीकृत हुई।

(2) द्वितीय पकिल्पना के आधार पर प्राप्त आंकडे

क्र. सं.	पद	न्यादर्श का आकार	मध्यमान Mean	प्रमाणिक विचलन S.D	टी–परीक्षण t-test	सार्थक स्तर
1.	प्रधानाध्यापक	10	37.9	0.54	11.02	सार्थक अन्तर है
2.	अध्यापिका	10	33.6	1.11		

द्वितीय परिकल्पना के अनुसार–प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों व अध्यापिकाओं की गैर शैक्षणिक कार्यों में संलग्नता से उनकी शिक्षा प्रक्रिया पर पड़ने वाले प्रभाव के मध्य सार्थक अन्तर है। क्योंकि जब हमने दोनों समूहों से प्राप्त आंकडों के आधार पर दोनों समूहों का (मध्यमान) निकाला फिर दोनों ही समूहों का (प्रमाणिक विचलन) निकाला और इनके आधार पर दोनों समूहों की तुलना (टी–परीक्षण) के आधार पर की। जिसमें (टी) का मान (11.02) प्राप्त हुआ है जो (टी) सारणी के अनुसार (0.05) स्तर पर (1.96) से अधिक है और (0.01) स्तर पर (2.58) से भी अधिक है अतः यह कहा जा सकता है कि गैर शैक्षणिक कार्यों की संलग्नता प्रधानाध्यापकों की अपेक्षा अध्यापिकाओं को अधिक प्रभावित करती है जिससे उनकी शिक्षण क्षमता प्रभावित होती है। अतः दोनों समूहों पर पड़ने वाले प्रभावों में सार्थक अन्तर है। यह परिकल्पना अस्वीकृत हुई

(3) तृतीय पकिल्पना के आधार पर प्राप्त आंकडे

क्र. सं.	पद	न्यादर्श का आकार	मध्यमान Mean	प्रमाणिक विचलन S.D	टी–परीक्षण t-test	सार्थक स्तर
1.	प्रधानाध्यापक	10	37.9	0.54	9.86	सार्थक अन्तर है
2.	शिक्षामित्र	10	30.7	2.24		

तृतीय परिकल्पना के अनुसार–प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों व शिक्षा मित्रों की गैर शैक्षणिक कार्यों में संलग्नता से उनकी शिक्षा प्रक्रिया पर पड़ने वाले प्रभाव के मध्य सार्थक अन्तर है क्योंकि जब हमने दोनों समूहों से प्राप्त आंकडों का (मध्यमान) निकाला फिर दोनों समूहों का (प्रमाणिक विचलन) निकाला और दोनों समूहों के आंकडों के आधार पर तुलना करने के लिए (टी–परीक्षण) का प्रयोग किया तब (टी) का मान (9.86) प्राप्त हुआ है जो (टी) सारणी के मानक (0.05) स्तर पर (1.96) से अधिक है और (0. 01) स्तर पर (2.58) से भी अधिक है अतः कहा जा सकता है कि यहाँ भी प्रधानाध्यापकों की अपेक्षा शिक्षा मित्र अधिक प्रभावित हुए है और समूहों पर पड़ने वाले प्रभावों में सार्थक अन्तर है। यह परिकल्पना अस्वीकृत हुई

(4) चतुर्थ पकिल्पना के आधार पर प्राप्त आंकडे

क्र. सं.	पद	न्यादर्श का आकार	मध्यमान Mean	प्रमाणिक विचलन S.D	टी–परीक्षण t-test	सार्थक स्तर
1.	अध्यापक	10	34.4	1.74	1.23	सार्थक अन्तर नहीं है
2.	अध्यापिका	10	33.6	1.11		

चतुर्थ परिकल्पना के अनुसार–प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों व अध्यापिकाओं की गैर शैक्षणिक कार्यों में संलग्नता से उनकी शिक्षा प्रक्रिया पर पड़ने वाले प्रभाव के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है क्योंकि जब हमने दोनों समूहों से प्राप्त आंकडों के आधार पर दोनों का (मध्यमान) निकाला, दोनों का (प्रमाणिक विचलन) निकाला और फिर दोनों समूहों के मध्य तुलना करने के लिए (टी–परीक्षण) का प्रयोग किया जिसमें (टी) का मान (1.23) प्राप्त हुआ है जो (टी) सारणी के (0.05) स्तर पर (1.96) से कम है और (0.01) स्तर पर (2.58) से भी कम है अतः कहा जा सकता है कि गैर शैक्षणिक कार्यक्रम अध्यापकों व अध्यापिकाओं दोनों की दृष्टि से भी शिक्षा प्रक्रिया को प्रभावित करते है। **यह परिकल्पना स्वीकृत हुई**

(5) पंचम पकिल्पना के आधार पर प्राप्त आंकडे

क्र. सं.	पद	न्यादर्श का आकार	मध्यमान Mean	प्रमाणिक विचलन S.D	टी–परीक्षण t-test	सार्थक स्तर
1.	अध्यापक	10	34.4	1.74	4.11	सार्थक अन्तर है
2.	शिक्षामित्र	10	30.7	2.24		

पंचम परिकल्पना के अनुसार–प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों व शिक्षा मित्रों की गैर शैक्षणिक कार्यों में संलग्नता से उनके शिक्षा प्रक्रिया पर पड़ने वाले प्रभाव के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया है क्योंकि जब हमने दोनों समूहों के आंकडें एकत्र किए और दोनों समूहों का (मध्यमान) निकाला (प्रमाणिक विचलन) निकाला तथा इनके आधार पर दोनों समूहों की तुलना करने के लिए (टी–परीक्षण) किया। जिसमें (टी) का मान (4.11) आया और जो (टी) सारणी के अनुसार (0.05) स्तर पर (1.96) से अधिक है तथा (0. 01) स्तर पर (2.58) से भी अधिक है अतः कहा जा सकता है कि इस गैर शैक्षणिक कार्यों के प्रति अध्यापकों व शिक्षा मित्रों के दृष्टिकोणों में भिन्नता है। **यह परिकल्पना अस्वीकृत हुई**

(6) षष्ठम पकिल्पना के आधार पर प्राप्त आंकडे

क्र. सं.	पद	न्यादर्श का आकार	मध्यमान Mean	प्रमाणिक विचलन S.D	टी–परीक्षण t-test	सार्थक स्तर
1.	अध्यापिका	10	33.6	1.11	3.67	सार्थक अन्तर है
2.	शिक्षामित्र	10	30.7	2.24		

षष्ठम परिकल्पना के अनुसार–प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापिकाओं संलग्नता से उनके शिक्षा पर पड़ने वाले प्रभावों के मध्य सार्थक अन्तर है क्योंकि जब दोनों समूहों के आंकडों के आधार पर दोनों का (मध्यमान) निकाला गया, (प्रमाणिक विचलन) निकाला गया और इन आंकडों के आधार पर दोनों की तुलना करने के लिए (टी–परीक्षण) किया। जिसमें (टी) का मान (3. 67) प्राप्त हुआ और जो (टी) सारणी के अनुसार (0. 05) स्तर पर (1.96) से अधिक है तथा (0.01) स्तर पर (2.58) से भी अधिक है अतः कहा जा सकता है कि गैर शैक्षणिक कार्यों का प्रभाव अध्यापिकाओं की अपेक्षा शिक्षामित्रों की मानसिकता पर और ज्यादा पडता है दोनों में भिन्नता पायी गयी है। **अतः यह परिकल्पना स्वीकृत हुई**

निष्कर्ष

अतः निष्कर्ष के आधार पर हम कह सकते हैं कि प्रधानाध्यापक, अध्यापक, अध्यापिका व शिक्षा मित्र प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षा प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है और इन सभी का प्रमुख कार्य शिक्षा की व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने व्यवस्थित करने और उसके स्तर को ऊँचा उठाने बच्चों को उनके स्तर के आधार पर शिक्षित करने का लक्ष्य पूरा करना है जिससे कि हम भारत में अशिक्षा व अज्ञानता की समस्या को दूर कर सकें और शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लक्ष्य के आधार पर प्रत्येक बच्चे को शिक्षित करके उसे प्राथमिक शिक्षा पूर्ण करने में मदद कर सकें जिससे उसके व देश के भावी जीवन की नींव रखी जा सके और इन लोगों के बिना शिक्षा के लक्ष्य को पूर्ण करना सम्भव भी नहीं है। परन्तु इस अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर और परिकल्पनाओं के परिणामों को देखते हुए हम कह सकते हैं कि गैर शैक्षणिक कार्यों की संलग्नता से उनकी शिक्षा पर पड़ने वाले प्रभावों के सम्बन्ध में प्रथम परिकल्पना के आधार पर प्रधानाध्यापक और अध्यापकों के मध्य अन्तर पाया गया है। क्योंकि प्रधानाध्यापकों का अधिकांश समय मध्यान्ह भोजन, शुल्क मुक्ति, यूनिफार्म व विद्यालय के अन्य कार्यों में व्यतीत होता है पर प्रधानाध्यापक की गैर शैक्षणिक कार्यों में संलग्नता शिक्षा प्रक्रिया को उतना प्रभावित नहीं करती जितना कि अध्यापकों की करती है। वे इन कार्यों को करने से मानसिक रूप से कुंठा, थकान व शारीरिक अस्वस्थता का अनुभव करते हैं और जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव शिक्षा प्रक्रिया पर पड़ता है, इसी प्रकार द्वितीय परिकल्पना के आधार पर अध्यापिकायें भी प्रधानाध्यापकों की अपेक्षा इससे ज्यादा प्रभावित होती हैं और शिक्षा प्रक्रिया अवरूद्ध होती है। तृतीय परिकल्पना के आधार पर भी प्रधानाध्यापकों व शिक्षा मित्रों में असमानता पायी हुई है। क्योंकि शिक्षा मित्रों को भी शिक्षण का कार्य करना होता है जो गैर शैक्षणिक कार्यों के कारण

अवरूद्ध हो जाता है। चतुर्थ परिकल्पना के आधार पर अध्यापकों व अध्यापिकाओं के विचारों में गैर शैक्षणिक कार्यों के सम्बन्ध में समानता पायी गई है। क्योंकि दोनों ही शिक्षण कार्यों का सम्पादन करते हैं और शिक्षा को सकारात्मक दिशा देते हैं। पर दोनों की ही अनुपस्थिति शिक्षा को प्रभावित करती है। पंचम परिकल्पना के अनुसार अध्यापकों व शिक्षा मित्रों में गैर शैक्षणिक कार्यों में संलग्नता के कारण शिक्षा प्रक्रिया पर पड़ने वाले प्रभावों के सम्बन्ध में दोनों के विचारों में असमानता है। क्योंकि अध्यापक अनुभव, कक्षा परिस्थितियों, ज्ञान, मनोविज्ञान व शिक्षण व्यवहार में परिपक्व होता है परन्तु शिक्षा मित्रों को इन सब प्रकार सामंजस्य बनाने में मुश्किल होती है। षष्ठम परिकल्पना के आधार पर भी अध्यापिकाओं व शिक्षामित्रों की गैर शैक्षणिक कार्यों में संलग्नता को लेकर विचार धारा में अन्तर पाया गया है। अतः यह कहा जा सकता है कि अध्यापक, अध्यापिकाऐं, प्रधानाध्यापक व शिक्षा मित्र सभी शिक्षा प्रक्रिया के आवश्यक अंग हैं अतः गैर शैक्षणिक कार्यों में संलग्नता से सभी शारीरिक व मानसिक दबाव का अनुभव करते हैं। जैसे–पोलियों उन्मूलन, जनगणना, टीकाकरण, चुनाव व मध्यान्ह भोजन इत्यादि से सम्बन्धित कार्य थकान, कुंठा व असंतोष को जन्म देते हैं गैर शैक्षणिक कार्यों हेतु विशिष्ट सम्बन्धित व्यक्ति की नियुक्ति की जानी चाहिए। इन सभी गैर शैक्षणिक कार्यों हेतु प्रोत्साहन राशि की व्यवस्था होनी चाहिए। निजी/एन0जी0ओ0 के सदस्यों द्वारा इन कार्यों को सम्पन्न करना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- आर0ए0 शर्मा– शिक्षा अनुसन्धान, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ
- बुच एम0पी0–फोटो सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली।
- बुच एम0पी0–सिक्स्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली।
- माथुर बिना (2005)–राजस्थान में मध्याहन भोजन योजना कार्यक्रम की स्थिति का विश्लेषण
- नाइक, एम (2007) – कर्नाटक के अक्षर दसोह योजना प्रतिवेदन
- मध्यान्ह भोजन योजना– www.middaymeal.com
- प्राथमिक आधार भूत शिक्षा– www.elementryeducation.com
- जैन साह (2005)– मध्यप्रदेश में मध्यान्ह भोजन योजना समाज प्रगति सहयोग